अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन



Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6



दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन
Fort & Selected Building

दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन **Fort & Selected Building**

अध्याय शीर्षक	दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Fort & Selected Building**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन **Fort & Selected Building**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – दुर्ग, किले, गढ़ व चुनिन्दा भवनों का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

दुर्ग व भवन

यहां के निवास–भवनों के मुख्य द्वार छोटे तथा खिड़कियां सन्कीर्ण होती थी, जो प्राचीन असुरक्षा की भावना को दर्शाती है। भवनों के गवाक्ष स्थापत्य कला को प्रदर्शित करते हैं। भवनों की सम्पूर्ण बनावट भौतिकता की अपेक्षा सान्स्कृतिक एवम् भावात्मक प्रभाव दर्शाती हैं। कालान्तर में भवन निर्माण शैली में परिवर्तन हुये है, किन्तु ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अभी भी पुरानी शैली के भवन देखने को मिल जाते हैं।

भूरागढ़ किला

केन के बहाव की दिशा के बाए/पश्चिमी किनारे पर एक अनोखा और अलग किला है जो बान्दा से लगभग 1.2 किलोमीटर की दूरी पर है। यह नदी की तरफ निकलते हुए, छोटी पहाड़ी पर स्थित है और इस वक्त वहां पर केवल भग्नावशेष ही उपलब्ध हैं, जिनको भूरागढ़ का किला कहते हैं।

यहां जाने का कोई रास्ता नहीं है। बान्दा की तरफ से आने पर केन नदी पार करते ही रेलवे लाइन पैदल पार कर के ही किला पर जा सकते है या फिर और 4 किलोमीटर आगे रेल लाइन पार कर गान्व की सन्करी गलियों में चल कर वापस किले पर आ सकते है। गाड़ी खड़ी करने का कोई स्थान नहीं।

ए एस आई सन्रक्षण का कार्य देखती है अतः म्यूजियम की तरह ही इसकी भी हालत होगी।
क्या किसी ने ए एस आई सन्रक्षित बान्दा का म्यूजियम देखा??????

भूरागढ़ किला केन नदी के किनारे स्थित है। किले से सूर्यास्त देखना एक खूबसूरत अनुभव है। भूरागढ़ किले का ऐतिहासिक महत्व बुन्देला शासन और महाराजा छत्रसाल के पुत्र ह्रदय शाह और जगत राय से जुड़ा है। जगत राय के पुत्र कीरत सिन्ह ने 1746 ई0 में भूरागढ़ किले की मरम्मत करवाई थी। अर्जुन सिन्ह किले के रखवाले थे।

1787 ई0 में नवाब अली बहादुर प्रथम ने बान्दा की देखभाल शुरू की। उन्होंने 1792 ई0 में अर्जुन सिन्ह के खिलाफ युद्ध लड़ा। फिर यह कुछ समय के लिए नवाब के शासन में रहा, लेकिन राजाराम दाऊवा और लक्ष्मण दाऊवा ने इसे फिर से नवाबों से जीत लिया। अर्जुन सिन्ह की मृत्यु के बाद नवाब अली बहादुर ने भूरागढ़ किले पर कब्ज़ा कर लिया। 1802 ई0 में नवाब की मृत्यु हो गई और उनके बाद गौरीहार महाराज ने प्रशासन सम्भाला।

ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ महान स्वतन्त्रता सन्ग्राम 14 जून 1857 को शुरू हुआ था। इसका नेतृत्व बान्दा में नवाब अली बहादुर द्वितीय ने किया था। यह सन्घर्ष उम्मीद से कहीं ज्यादा भयन्कर था और इलाहाबाद, कानपुर और बिहार के क्रान्तिकारी नवाब के साथ मिलकर अन्ग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई में शामिल हुए। 15 जून 1857 को क्रान्तिकारियों ने ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट कॉकरेल की हत्या कर दी। 16 अप्रैल 1858 ई0 को व्हिटलॉक बान्दा पहुन्चे और उन्होंने बान्दा की क्रान्तिकारी सेना के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी। इस युद्ध के दौरान किले में लगभग 3000 क्रान्तिकारी मारे गए। गजेटियर के अनुसार 800 लोग मारे गए थे। इसका यादगार पुलिस लाइन कालूकुआं सड़क पर अस्पताल चौराहे पर बनी पुलिस चौकी के अन्दर बनी हुई है। इस युद्ध में सरबई के मुस्लिम नट (कलाबाज़ी करने वाले) ने बलिदान दिया। उनकी कब्रें किले के अन्दर पाई जाती हैं। किले के आसपास कई क्रान्तिकारियों की कब्रें पाई जाती हैं।

08 जून 1859 ई0 को कई क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें मृत्युदण्ड और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

जिला न्यायालय की फाइल सन्ख्या 19, वर्ष 1859ई0 के अनुसार–

1. नवाब अली पुत्र विशाल अली खान।
2. अकबर बेग गोलान्दाज
3. फ़रायाज़ मोहम्मद नियाज पुत्र मो
4. चट्टा खान
5. मुख्तायार मोहम्मद
6. देवीदीन

7. कादिर बेग
8. इदरिश मोहम्मद
9. वेद अली पुत्र मर्दान अली
10. रहमत अली खान
11. पैगाम अली
12. काले खां
13. इस्माइल खान
14. कुतुब ऐ खान
15. आयाम
16. शेख जुम्मन
17. विलायस हुसैन (दीवान–ए–रियासत, बान्दा)
18. गुलाम हैदर खान
19. सरदार मोहम्मद (डिप्टी कलेक्टर, बान्दा)
20. हैदर खान (नाजिम रियासत)
21. इमदाद अली
22. मीर फरहत अली (तहसीलदार, बान्दा)
23. हनुमन्त राव थाटे
24. बाबू राव गोरे
25. हिमकत उल्ला खां (डिप्टी कलेक्टर, फतेहपुर)
26. उस्मान खान
27. मिर्ज़ा इमदाद अली बेग
28. मोहम्मद अली बेग

सुन्गरा राज्य के श्री राव महिपत सिन्ह
को उनके 80 अधिकारियों के साथ इसी किले में फान्सी दी गई थी।

मई 1858ई0 से लेकर भारत की आज़ादी तक किला ब्रिटिश शासन के अधीन रहा। भारतीय पर्यटन और पुरातत्व अधिकारियों की उदासीन नज़रिया के कारण किला विनाश के कगार पर पहुन्च गया। तहखाना और निचली मन्जिलें मिट्टी और कचरे के नीचे दब गईं। हालान्कि, पर्यटन विकास योजना 2005–06 ई0 के तहत, किले के लिए अधिकारियों को लगभग 1.6 मिलियन रुपए जारी किए गए। इस पैसे से एक पार्क, चारदीवारी, शहीद स्मारक आदि का निर्माण किया गया है। लेकिन ऐतिहासिक महत्व की वास्तुकला और डिजाइन को सन्ग्रहीत करने और पुनर्स्थापित करने के लिए कोई काम नहीं किया गया है।

भूरागढ़ किला, जो ढ़हने वाला है, सिर्फ़ एक स्थापत्य कला या इतिहास का टुकड़ा नहीं है बल्कि यह त्याग, देशभक्ति, सम्प्रभुता और समानता का प्रतीक है। यह सन्घर्ष का गवाह है। यहां विभिन्न सम्प्रदायों, जातियों, समुदायों, धर्मों के लोग एक साथ आए और एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिलाकर विदेशी शासकों के खिलाफ लड़े। यह महान घटना की भूमि है जिसने बान्दा को ब्रिटिश शासन से आज़ादी पाने वाला भारत का पहला शहर बनाया। यह हमारे गौरवशाली अतीत का दर्पण है। यह बान्दा का गौरव है।

भूतल तक जाने वाला मार्ग ढह गया. ‘











दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन **Fort & Selected Building**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कालिन्जर किला

बान्दा शहर मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर दूर स्थित कालिन्जर किला अजेय और ऐतिहासिक रहा है। पुरातत्व का महत्व भी रखता है। चन्देल शासको द्वारा निर्मित सबसे लोकप्रिय किलों में से एक है और बुन्देलखण्ड में सबसे बेहतरीन स्थान में से एक है। विन्ध्य की विन्ध्य पर्वत की पहाड़ी में स्थित कालिन्जर किला चन्देल शासको द्वारा 900 ईस्वी में होना बताया गया है। इसके अन्दर भी कई मन्दिर है नीलकन्ठ महादेव मन्दिर की तो चर्चा पौराणिक कथाओं में भी है। लोक विश्वास है कि समुद्र मन्थन से निकले विष को ग्रहण करने के बाद महादेव इसी स्थान पर रहे हैं। यहां स्थित बुड्ढा बुड्ढी, मृग धारा, बैकुन्ठ मन्दिर, पातालगंगा, शैल चित्र आदि दर्शनीय है। शेरशाह का मकबरा भी किले में स्थित है, ऐसा कहा जाता है।

अभिलेखीय अभिलेखों और कुछ प्रारम्भिक ग्रन्थों में इसका प्राचीन नाम कालन्जरा है। इस शब्द की व्याख्या भगवान शिव के एक पहलू को दर्शाने के लिए की गई है, जिन्होंने क्षय और विनाश की शक्ति काल पर विजय प्राप्त की थी –

कालम् जयन्ती इति कालन्जराः।

यह ध्यान देने योग्य है कि शिव महादेव के विभिन्न पहलुओं में बुराई और अस्वास्थ्यकर तत्वों को नष्ट करने की उनकी विशेषता भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

विन्ध्याचल का वह क्षेत्र जहां कलन्जरा स्थित है, शिव पूजा के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। पुरातत्व साक्ष्यों द्वारा समर्थित अगामिक और तान्त्रिक पाठ इस बात की पुष्टि करते हैं। स्रोत सामग्री से पता चलता है कि ईसाई युग की शुरुआती शताब्दियों के दौरान कलन्जरा में शैव मठ की स्थापना की गई थी। मिट्टी की मुहरों और साहित्यिक सन्दर्भों से यह पता चलता है। कलन्जरा के प्रतिनिधि महादेव को न केवल विन्ध्य क्षेत्र में बल्कि विन्ध्य परिधि के बाहर भी सम्मान दिया जाता था। कलन्जरा क्षेत्र के देवता का उल्लेख गुप्त युग और प्रारम्भिक मध्यकाल के कई अभिलेखों में मिलता है। देश के कई क्षेत्रों में उन्हें सर्वोच्च भगवान के रूप में पूजा जाता था।

गुप्तोत्तर काल से लेकर मध्यकाल के अन्त तक कलन्जरा धार्मिक केन्द्र और सामरिक महत्व के राजनीतिक केन्द्र दोनों के रूप में विकसित हुआ। गुर्जर–प्रतिहार, कलचुरी और चन्देल राजवन्शों के शासन के दौरान, इन राजवन्शों के कई शासकों को अपनी भूमि की पवित्रता पर गर्व था। उन्होंने धार्मिक केन्द्रों के सम्वर्धन और सन्रक्षण तथा अपने क्षेत्रों के आर्थिक और सान्स्कृतिक विकास में बड़े पैमाने पर योगदान दिया। विन्ध्य क्षेत्र की उन्नति का श्रेय आचार्यों और व्यापारिक समुदायों को जाता है , जिनमें से कलन्जरा गुप्तोत्तर काल के दौरान एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था।

यहां यह बताना ज़रूरी है कि विन्ध्य क्षेत्र में रहने वाले, चार वर्णों के अलावा, इस क्षेत्र में ज्यादातर आदिवासी लोग रहते थे। वे पुलिन्द थे, उनके भगवान <u>कलन्जरपुरवराधिसा</u> थे। शासक राजाओं ने आदिवासियों की आस्था का सम्मान किया और कलन्जरा की पहाड़ी पर भगवान महादेव और उनसे जुड़े दूसरे देवताओं की विशाल मूर्तियां बनवाईं। शिव, दुर्गा, गणपति और दूसरे देवताओं की कुछ शानदार मूर्तियां इस ओर इशारा करती हैं।

कलन्जारा में प्रारम्भिक मध्ययुगीन स्थापत्य और मूर्तिकला कला नैतिकता और सौन्दर्यशास्त्र के बीच सामन्जस्यपूर्ण सन्लयन के विचार से ओतप्रोत है। कलन्जारा में शिव, विष्णु और अन्य देवताओं की कई छवियों में योगी का पहलू वास्तव में उल्लेखनीय है। तान्त्रिक प्रभाव स्थल की पत्थर की कला पर स्पष्ट दिखाई देता है। इसे भव्य रूपों और छवियों के प्रतीकात्मक और सजावटी पहलुओं में देखा जा सकता है। कलन्जारा में केन्द्र के विकास के लिए जिम्मेदार शैव आचार्यों ने इसे धर्मों के लोगों के लिए एक आकर्षक केन्द्र बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच समानता और सद्भावना का विचार कलन्जारा में सदियों तक जारी रहा। कला के अवशेष और अभिलेखीय साक्ष्य इस कथन की पुष्टि करते हैं।

कलन्जरा की कला शैव देवताओं, पन्चदेवों और व्यन्तर देवताओं की प्रतिमा विज्ञान के अध्ययन के लिए बहुमूल्य सामग्री प्रदान करती है। कलन्जरा और उसके आस–पास नाग, यक्ष और नदी देवियों की कई आकृतियां खोजी गई हैं। उनमें से कई में पर्यावरण और रूप की क्षेत्रीय विशिष्टताओं के साथ–साथ दिलचस्प प्रतिमा सम्बन्धी विशेषताएं हैं।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लगभग 900 ई0 की अवधि के दौरान इस क्षेत्र में समकालिक छवियों की सन्ख्या और दायरा सीमित है। लेकिन बाद में उनकी सन्ख्या में वृद्धि हुई। लगभग 900 और 1300 ई0 के बीच की अवधि में समकालिक छवियों की सन्ख्या में स्पष्ट वृद्धि हुई थी। यह मुख्य रूप से धार्मिक आत्मसात और तांत्रिक मान्यताओं में वृद्धि के कारकों के कारण था।

चन्देलों ने मन्दिर वास्तुकला और स्थायी लय और सौन्दर्य की मूर्तिकला के निर्माण में योगदान देकर खुद को अमर कर लिया है। खजुराहो में उत्कर्ष, महोबा और अजयगढ़ चन्देलों के राजनीतिक केन्द्र थे। कलन्जरा धार्मिक केन्द्र था, जहां शैव धर्म ने उल्लेखनीय प्रगति की। जहां शैव दार्शनिक सिद्धान्तों ने कलिन्जरा में प्रगति की, वहीं कला कृ तियों ने इस महान धर्म की आध्यात्मिक भावना को पूरक बनाया।

कालन्जरा ने, कभी–कभार होने वाले छापों और विनाश के बावजूद, आज तक भारतीय धार्मिक जीवन और विचार की प्रतिष्ठित विरासत को सुरक्षित रखा है। कालन्जरा के स्मारक हमें भारतीय शासकों के गौरवशाली समय की याद दिलाते हैं, जिन्होंने खुद को और अपने लोगों को नैतिक आचरण और सौंदर्य चेतना की वान्छित ऊंचाइयों तक पहुंचाने का प्रयास किया। धार्मिक पहलू के साथ–साथ, कलिन्जरा में कला अवशेष प्रारम्भिक मध्ययुगीन काल के दौरान भारतीय समाज के कई धर्मनिरपेक्ष पहलुओं पर दिलचस्प प्रकाश डालते हैं।

1. प्राचीन कार्यों और शिलालेखों में इस स्थल का उल्लेख कलन्जरा, कलन्जरा–अद्रि, कलन्जरापुरा–वारा आदि के रूप में किया गया है।

2. कलन्जरा में ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के कई अभिलेख पाए गए हैं। इस स्थल पर शासक की शाही उपाधियों के साथ गुर्जर–प्रतिहार शासक मिहिरभोज (836–885 ई0) का एक शिलालेख उत्कीर्ण है। इस शासक के बराह ताम्र–पत्र शिलालेख में कलन्जरा मदाल का सन्दर्भ मिलता है (डीसी सर्का सिलेक्ट शिलालेख, खण्ड।।, 1983, पृष्ठ 233–34)। चन्देल धन्ग के खजुराहो पत्थर के शिलालेख में उल्लेख है कि धन्ग ने कलन्जरा, मालवा–नदी (बेतवा) पर विदिशा, यमुना के तट, चेदि क्षेत्र और गोपगिरी (ग्वालियर) से घिरे क्षेत्र पर शासन किया था। शिलालेख वासुदेव (कृष्ण) और सावित्री (सुन्गोद) की आराधना के साथ समाप्त होता है। (सर्का, इबिड। पृष्ठ 63–65)। सैम के चाडेला त्रैलोक्य–वर्मन के गर्रा कॉपर–प्लेट रिकॉर्ड (नंबर 1) में (1261 (1205 ई0) में सम्राट का उल्लेख परम–महेश्वर (शिव के महान भक्त) और कलन्जरा–अधिपति (कलन्जरा के शासक) के रूप में किया गया है। (लगभग, वही, पृ. 319).

3. भगवान शिव के साथ अपने गहरे सम्बन्ध के कारण, कालन्जरा किले और शहर की प्रशंसा क्षेत्रीय राजवन्शों और अन्य क्षेत्रों के शिलालेखों में की गई है।

रनगढ़ किला

रनगढ़ दुर्ग तो 18 शताब्दी में रिसौरा रियासत की रखवाली के लिए महोबा के चरखारी नरेश का बनवाया रनगढ़ दुर्ग खुद में अद्भुत है। जलीय दुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान में भगवान शिव का मन्दिर स्थानीय ग्रामवासियों ने बना दिया है यहाँ खिचडी का प्रसाद दिया जाता है। वर्तमान में इसका आधा हिस्सा यूपी में है और आधा हिस्सा मध्य प्रदेश में है और दोनों राज्यों की सीमा कहे जाने वाली केन नदी के बीच में बीच एक टापू पर स्थित है।यह दुर्ग मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले और यूपी के बांदा में स्थित है। दो राज्यों के बीच में होने के कारण अपने जिम्मेदारी को दूसरे राज्य पर ठोक दिया जाता है। इसी कारण यह उजाड़ होने के रास्ते पर जा चुका है। नरैनी तहसील क्षेत्र के गौरी शिवपुर गांव के पास स्थित यह ऐतिहासिक दुर्ग करीब चार एकड़ में फैला हुआ है। नदी की जलधारा के बीच चट्टानों पर काफी ऊंचाई पर यह किला बना हुआ है। गर्मी में पानी कम हो जाने पर इस पर आसानी से पहुंचा जा सकता है। एक अष्टधातु की तोप पाई गई थी जो वर्तमान में मध्य प्रदेश सरकार के पास है। डाकुओं की स्थली होने के कारण भी यह काफी सुरक्षित रहा लेकिन जब से डाकुओं का राज्य खत्म हुआ, अवैध खनन के कारण और अवांछित लोगों के आने–जाने के कारण, भारतीय पुरातत्व की आंखों के होते हुए इसमें अवांछित खुदाई हुई और इसके देश की एतिहासिक कलाकृतियां, खिड़की दरवाजे मूर्तियां चोरी करके ले गए और धीरे–धीरे यह खंडहर में तब्दील हो गया। भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन होने के बाद भी, उच्चशिक्षित प्रशिक्षित अधिकारियों द्वारा इसका संरक्षण किया गया और इसकी रक्षा की गई और इसका वही हाल हुआ जो एएसआई के तहत अन्य ऐतिहासिक भवनों का हुआ। बान्दा में स्थित छत्रसाल म्युजियम भी भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन होने के बाद भी, उच्चशिक्षित प्रशिक्षित अधिकारियों के आज खोजने पर भी नहीं मिलता।

बांदा के नरैनी तहसील में केन नदी के बीच स्थित ऐतिहासिक रनगढ़ का किला, रनगढ़ का किला जलीय दुर्ग है। 18वीं सदी के महोबा के चरखारी नरेश द्वारा रियासत की रक्षा के लिए बनवाया गया था। केन नदी के मध्य में

स्थित होने के कारण इसकी बनावट, इसे एक अनूठा चरित्र प्रदान करती है। भौगोलिक स्थिति के कारण कभी डकैतों की शरण व समस्थली भी रहती रही है। इसके पीछे कारण का नदी के बीच में होने के कारण यहां पहुंचना आम लोगों के लिए तो ही अत्यंत कठिन था।

तरौंहा का किला

क्षेत्र के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक किलों में तरौंहा का किला आज भी अपने ऐतिहासिक गौरव गाथा का साक्षी है। तरौहा एक छोटी सी बस्ती है व चित्रकूट की मूल बस्ती है। प्राचीन काल में तारौंहा शिक्षण अभ्यास एवं संस्कृति का मूल केंद्र था। कहते हैं शिक्षा की दृष्टि से बड़े महत्व का था और तमाम उद्भट विद्वान तरौहा में भी रहते थे।

बघेल राज्य के मूल पुरुष व्याघ्र देव ने 1133 ईस्वी में बुन्देलखन्ड के उत्तरी पश्चिमी भाग में अपना प्रभुत्व स्थापित किया, अपनी राजधानी सर्वप्रथम तरौहा तत्पश्चाप गहोरा में स्थापित की। 14 वंशजों ने 275वर्षों तक चित्रकूट के पास गहोरा रैपुरा से शासन किया। सुरकी राजा सुखदेव ने 1147 ईस्वी में तौराहा का किला बनवाया। इस किले पर 28 पीढ़ियां ने राज्य किया था चित्रकूट तुर्की राजाओं का प्रसिद्ध राज्य था जो बघेल राज्य रीवा के अधीन था बघेल राजा रामचंद्र ने अकबर के अधीनता स्वीकार कर नाम धूल धूसरित कर दिया। शिल्प की दृष्टि से किला बहुत ही समृद्धशाली है। किले में झारखंडी माता मंदिर के ध्वन्सावशेष पुरावशेष आज भी दर्शनीय हैं। पर्यटन स्थल ना होने के कारण अराजक तत्वों द्वारा इसको नष्ट किया जा रहा है।

छत्रसाल की, 1731 ईस्वी में, मृत्यु के बाद पुत्रों के बीच राज्य सीमा के विभाजन के इतिहास में, रनगढ़ किला, जो बान्दा से 19 मील दक्षिण में है, के साथ इसका विवरण वर्णन पाया जाता है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों किले दीवान कीरत सिन्ह के द्वारा बनाए गए थे। दीवान कीरत सिन्ह, 1746 ईस्वी में, सीहोण्डा में अधीनस्थ शासनकर्ता थे। राजा गुमान सिन्ह के राज्य क्षेत्र में, सामरिक स्थिति के अनुसार, उपयुक्त उपयोगी एवम् सशक्त स्थान पर ये किले थे और राजा के अधिकार–प्रदत्त के अनुसार किलेदार राजाराम के अधीन थे।

1804 ईस्वी में, ये अन्ग्रेजों के शासन के विरुद्ध और उनकी सेना को आगे बढ़ने के विरुद्ध उपयोगी थे। लेकिन कर्नल मेसिलबैक के द्वारा 1 महीने की तोप युद्ध में, पच पहाड़िया/ पचवारा/ पचपहरा जो पांच छोटी–छोटी पहाड़ियों के नाम से जानी जाती हैं, पर युद्ध के बाद भगा दिया गया था। यह पचपहरा किले के उत्तर पश्चिम में स्थित है, और तभी से यह किला स्वतः नष्ट होने की दशा के कगार में आ गया था।

नवाब समसेर बहादुर ने, 1858 ईस्वी में, इसके मरम्मत का मन बनाया किंतु ''सोगोर फील्ड फोर्स'' की बढ़त के कारण इस योजना को छोटा करना पड़ा। ढ़हते(Crumbling–ढ़हते)हुए ध्वन्शावशेष बहुत छोटे छोटे क्षेत्रफल में हैं और यह अकेला शिल्प कृति या शिल्प कला के हिसाब से कोई विशेष कृति नहीं है।

1907 ईस्वी में गौरीहार के राजा के वन्शजों, जो पूर्व किलेदार के वन्शज हैं, ने छिपे गड़े खजाने को ढून्ढने की आज्ञा प्राप्त कर ली। कहा जाता है कि खजाना तीन लाख से ज्यादा सिक्कों के रूप में था। राजा के पास उपलब्ध योजना प्लान के अनुसार, यह बिन्दु स्थान दक्षिण पूर्व में स्थित एक बड़े कुए के बिल्कुल पास था। कुछ महीने के लगातार खुदाई के बाद यह कार्य निष्फल साबित हुआ।

मठ

बदौसा –बांदा जिले के अंतर्गत एक बदौसा नाम का जगह है, जो एक थाना भी है। मध्ययुगीन वास्तु शिल्प कला की धरोहर बिल्हरिया मठ का अस्तित्व है, शासन प्रशासन और स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा अनदेखी के चलते नष्ट होने के कगार पर है।

लगभग 1300 साल पुराने गौरवशाली चंदेल राज्य की यशोगााथा का वर्णन करती हुई यह मठ, ऐतिहासिक धरोहर पर्याप्त संरक्षण और देख–देख के अभाव में नष्ट और भ्रष्ट होती चली जा रही है।

मध्य प्रदेश की सीमा से लगे जनपद के अंतिम छोर पर, फतेहगंज के जंगल के किनारे, एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित बिल्हरिया मठ अपने जर्जर काया लिए, अंतिम सत्य, मृत्यु के कगार पर है।

खजुराहो शैली में बने, बेजोड़ नक्काशी को लिए हुए, खूबसूरती, जो बहुत विशाल है, यह मठ भारतीय पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है और जैसा होता है– संरक्षण कहां होता है?

इतिहासकारों के मुताबिक इस मठ का निर्माण 9वी सदी के चंदेल राजाओं ने कराया था। इस मठ की ऊंचाई लगभग 22 मीटर है। इसमें चंदेल कालीन वास्तुशिल्प युक्त अलंकृत व सुसज्जित मूर्ति है। मठ में शिखर दिखाई नहीं देता, संभवत शिखर नष्ट हो चुका है। मुख्य द्वार में भगवान विष्णु की मूर्ति है, दाहिने और ब्रह्मा और शिव की अत्यंत सुंदर खूबसूरत मूर्तियां विद्यमान है। इस मठ के निर्माण में चुना, सीमेंट, बालू आदि का कहीं प्रयोग देखने को नहीं मिलता। संभवत पत्थर एक दूसरे के ऊपर रखकर ही बनाए गए हैं। बुंदेली राज्य में फतेहगंज और गौधर्मपुर एक परगना के रूप में विकसित हुआ था। स्थानीय निवासी जनश्रुति के आधार पर बताते हैं कि पुरातत्व विभाग में 2009–10 में सीढ़ियां बनाए जाने के लिए 901865/– रुपए मिले थे जिससे अमानक सीढ़िया बनवाई गयी। वर्तमान में यह सीढ़ियां भी उपलब्ध नहीं है। जनप्रतिनिधियों को इस मठ से कोई वोट वगैरह नहीं मिलने हैं अतः किसी ने भी इसमें कोई पहल नहीं की।

बिल्हरिया मठ के बिल्कुल आसपास और भी कई ऐतिहासिक स्थल है जिसमें वीरगढ़ दुर्ग मुख्य है। बघेल नरेश वीर वर्मन देव ने बनवाया था। दुर्ग की दीवार अभी भी कहीं देखने को मिल जाती हैं। दुर्ग में सुरक्षा के लिए आवश्यक कई प्रवेश द्वार थे। पहाड़ी पर नरेशों के अनेक भग्नावशेश उपलब्ध हैं। बघेल नरेश इसी दुर्ग में सेना रखते थे जो अब नष्ट भ्रष्ट व जीर्ण शीर्ण अवस्था में पहुंच चुका है।

वीरगढ़ और बिल्हरिया मठ से थोड़ी दूर पर एक शैलाश्रय उपस्थित है, इसके समीप छोटा सा जलप्रपात भी है। इसकी चट्टानों पर गेरुआ रंग से कुछ चित्र बने हैं। यह चित्र कलात्मक रूप से बहुत सुंदर है जिन्हें देखने से ऐसा लगता है कि उत्तर पाषाण युग के हैं। इन शैल चित्रों पर शोध कार्य भी किया गया था। बिल्हरिया मठ के आसपास बहुतायात में संरक्षण अभाव में मूर्तियां इधर–उधर फैली पड़ी है और जिन मूर्तियों का पैसे के हिसाब से कुछ मूल्य था उनको तस्कर, मूर्ति तस्कर उठाकर ले गए। यह पत्थर से निर्मित मूर्तियां अत्यंत सुंदर हैं जो चंदेल और बघेल नरेश के शासनकाल की याद दिलाते रहते हैं। देखरेख के अभाव में यहां के वाशिंदो ने कुछ मूर्तियां अपने घरों में रख ली हैं कुछ कीमती होने के कारण चोरी हो गई।

<u>जामा मस्जिद</u>

जामा मस्जिद 1265 हिजरी अर्थात् सन् 1849ई में पूरी बनी। अन्य दूसरी मस्जिदें भी है। राजा नवाब के विचार और स्वभाव भावनाओं का असर जनता के ऊपर पड़ा।

कहावत है "जैसा राजा वैसे प्रजा"

कहते हैं शहर के हर मोहल्ले और हिस्से में मस्जिद बनी जैसा मुसलमान हमेशा करते है। आज भी लगभग 60–70 मस्जिदे मौजूद हैं, लेकिन सब उजाड़ अवस्था में है। नवाब साहब की बेगम ने भी अपना अहाता बनवाया और उससे मिली हुई एक मस्जिद बनवाई।

<u>अन्टाघर</u>

नवाब जुल्फिकार अली को अन्ग्रेजों के रीति रिवाज बहुत पसन्द आए और वह बिल्कुल उन्हीं की तरह रहने के लिए कोशिश करते थे। बिलियर्ड का शौक उनको भी था। बारादरी महल के पूर्व में, खाई से पहले, बैठक के लिए एक ऊन्ची कुर्सी पर दो मन्जिला इमारत बनवाई। इसके निचले मन्जिल में एक कमरा, अपने <u>अन्ग्रेज मित्रों</u> के लिए, बिलियर्ड खेलने के लिए बनवाया। यह इमारत "अन्टा घर" के नाम से जानी जाती है। अन्टा का अर्थ है गोली। कान्च से बनी हुई छोटी गोलियां, जिससे बच्चे खेलते हैं और उसमें सबसे बड़ी गोली को अन्टा कहते है। बिलियर्ड की बाल भी बड़े अन्टे की तरह होती है। बिलियर्ड वाले कमरे के तीन तरफ कान्च की दीवारें बनी हुई थी ताकि बिलियर्ड खेलने वाले कमरे में खूब प्रकाश रहे और खेलने में परेशानी ना हो।

इस अन्टाघर के पश्चिम और दक्षिण दिशा में ऊन्चे और काफी लम्बाई चौड़ाई में चबूतरे बने थे जिन पर चढ़ने के लिए दोनों तरफ जीने बने थे। पूर्वी भाग में तहखाना था महल के ऊपरी भाग में स्त्रियां रहती थी। नीचे आने जाने वालों के लिए जीना बनवाया गया था, जो टूटी हालत में आज भी मौजूद है। ऊपरी भाग में कमरों के सामने

पश्चिम दिशा में दालान बना था निचली मन्जिल में कमरों के चारों तरफ दालान थे। कमरा पूरी तरह सुसज्जित दरवाजे छतों की कड़ियां, बारादरी की तरह, साल व सागवान की मजबूत लकड़ियों से बने थे।

इस अन्टाघर को स्वतन्त्रता के बाद सरकारी अस्पताल बना दिया गया। बिलियर्ड के कमरे को ऑपरेशन रूम बनाया गया। सरकार द्वारा अस्पताल की नई इमारत बन जाने पर इसे सीएमओ ऑफिस बनाया गया। बारादरी, अन्टाघर, कन्कर महल आदि, नबाब की लापरवाही और देखभाल न होने की वजह से खण्डहर में बदल गए।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार

बुन्देलखण्ड अनुसन्धान पोर्टल
कलन्जारा – एक ऐतिहासिक और सान्स्कृतिक प्रोफ़ाइल बी एन रॉय,
डीसी सर्का सिलेक्ट शिलालेख, खण्ड I, 1983, पृष्ठ 233–34
अमर उजाला 31012025 शनिवार पेज2
हिंदुस्तान 22042024

दुर्ग/किले/गढ़ व चुनिन्दा भवन **Fort & Selected Building**